विचार प्रवाह

स्वच्छता का सरताज

इंदौर फिर से देश में स्वच्छता का सरताज बन चुका है। गर्व के इन पलो क़ो लोगों ने खूब पैंजाय किया है । स्वच्छता में अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कर चूका इंदौर, अगले साल भी फिर से अव्वल रहना चाहेगा।स्वच्छता अब इंदौर की आदत बन चुकी है, साथ मे जूनून भी। इंदौर के लिये स्वच्छता आदत है, तो उसको क़ायम रखना और प्रतियोगिता में जीतना उसका जूनून है ।

हर बार इंदौर का ही नंबर वन बने रहना एक कठिन टास्क है।लेकिन जैसा कि होता है, जब आदत व्यवस्था बन जाय तो उसको जारी रखना उतना कठिन नहीं होता, जितना शुरुआत में होता है। यह नियम किसी भी अन्य कामों में भी लागू होता है। स्वच्छता में भी यही नियम लागू होता है। दण्डात्मक कार्यवाही, सतत निगरानी, आम जनता का उन सब मे सहयोग तथा सबसे बड़ी बात सफाईकर्मियों का स्वच्छता प्रति उनका नजरियां इस उत्सव क़ो खास बनाता है।

हमारे यहाँ पर नियमितवाले ड्रेस कोड में सड़कों पर तैनात सफाई कर्मियों में स्वच्छता अभियान क़ो अलग ऊंचे स्तर तक ले जाने में जितना योगदान दिया उतना योगदान इंदौर के किसी वर्ग का नहीं रहा है। हर मौसम में, हर हाल में, सड़कों पर तैनात रहना,सेना के जवानो के काम जैसा है। ऐसा सतत करना कठिन है,पर करने का जज्बा हो तो,काम करने लायक है। इस बात कों यहाँ के सफाई कर्मियों ने साबित करके दिखाया।

यहाँ के सफाईकर्मी इस पूरे अभियान की आत्मा है। 24×7 यानि चौबिसो घंटे,इनकी सेवा रहती है । डोर टू डोर कचरा संग्रहण करना , गीला सूखा कचरें का प्रथक्करण करना ,सार्वजनिक शौचालयों कि नियमित साफ़ सफाई के प्रति प्रतिबद्धता, सड़को की नियमित सफाई और धुलाई,सार्वजनिक उत्सवों के तुरन्त बाद सफाई आदि आदि ने इस पूरे अभियान में जॉन डाल दी है । सामने दिखती सफाई क़ो अंजाम देनें वाला हीरो,यह वर्ग ही है।

पर यह भी सच है कि अपने किये हुऐ कार्यों का इस वर्ग क़ो जितना सम्मान अभी इस दौर में मिल रहा है, उतना शायद इतिहास में कभी नहीं मिला।और इन सम्मानों की शुरुआत इंदौर से हुई है । इस शुरुआत ने वास्तव में देश क़ो गर्व की अनुभूति करवाई है । यह नवाचार है, जिसकी शुरुआत हमारे शहर से हुई है।जब स्वच्छता मैडल आता है तो सर्वप्रथम स्वच्छताकर्मियों का नाम लिया जाता है। अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर इनकी तस्वीरें होती है। इनका सार्वजनिक मंचो पर स्वागत होता है। स्वतंत्रता दिवस पर इनकों मुख्य अतिथि के तौर पर बुलाया जाता है।

उनकी यूनिफार्म उनकी पहचान बनी है । रेकिंग में आने पर बोनस आदि दिया जाता है। बेस्ट वर्कर के तौर उन्हें व्यक्तिगत पुरस्कार दिए जाते है। प्रशासन के द्वारा कुछ स्वछताकर्मियों की कहानियाँ और डाकयुमेंट्री सोशल मिडिया पर शेयर की जाती जिससे की वह रॉल मॉडल नजर आये। कुल मिला कर इस वर्ग क़ो वह उचाई देनें की पूरी कोशिश की गई ,जिसके वह वास्तव में हकदार है। हमेशा सरकार प्रशासन और वह नेता जो कुछ न करने के बावजूद भी पूरा श्रेय लेने के लिए आगे आ जाते है,उनके लिये अभी कोई मौका नहीं बचा है। वे यह साबित नहीं कर पाते कि शहर स्वच्छता में उनका बहुत कुछ हाथ है। वह पैसा जुटा सकते है, लेकिन यह नहीं कह सकते कि उनकी मेहनत की वजह से शहर स्वच्छ है। भले ही सिटी स्मार्ट हो लेकिन उसको साफ़ यही कमीं रख रहे है।

जमींनी हकीकत यह है कि इन सफाई कर्मियों के बिना स्वच्छता जारी रखना नामुमकिन है। कोई भी मैडल इनके बिना नामुमकिन है । तो इंदौर ने भी इस हकीकत क़ो समझते हुऐ पूरा श्रेय इन्ही वर्ग की झोली में डालकर इनके अहसानो क़ो उतारने की पूरी कोशिश की है। जिसमें वह सफल भी हुआ है।

– संगीता सनत जैन
9424552250

नाबालिगों में बढ़ रही है अपराधिक प्रवृत्ति

कानूनी रिसर्च: पिछले 5 वर्षों के अपराधिक डाटा के एनालिसिस पर चौंकाने वाले फैक्ट आए सामने

लॉ एक्सपर्ट और एडवोकेट डॉ पंकज वाधवानी ने केंद्र सरकार को भेज सुझाव

इंदौर। इंदौर के एडवोकेट एवं विधि विशेषज्ञ डॉक्टर पंकज वाधवानी ने पिछले 5 सालों के अपराधिक उत्तर का विश्लेषण कर एक कानूनी रिसर्च की है जिसमें अनेक चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं जिसमें से सबसे प्रमुख चिंतांजनक बात यह है की नाबालिक अर्थात 18 साल से कम आयु के अभियुक्तों अर्थात आरोपियों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ रही है जो की चिंतांजनक है हालांकि नाबालिकों के लिए किशोर न्याय अधिनियम 2015 का निर्माण किया गया है किंतु जिस गति से नाबालिकों द्वारा अपराध की प्रवृत्ति बढ़ रही है यह पूरे समाज के लिए चिंतांजनक है।राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो (ब्रह्मास्त्र) के आंकड़ों के अनुसार नाबालिगों द्वारा किए गए अपराधों में तेजी आई है। उदाहरणतः 2010-14 में नाबालिग

आयु वर्गानुसार रुझान की तालिका (सारांश)

नीचे एक सारणी में वर्ष 2018-2022 के दौरान विभिन्न आयु समूहों में अपराधियों की अनुमानित संख्या (लाखों में) दर्शाई गई है, जिससे प्रवृत्तियों का अनुमान लगाया जा सकता है (यह तालिका लेख में वर्णित रुझानों को प्रदर्शित करने के लिए काल्पनिक रूप से तैयार की गई है)-

आयु समूह	2018	2019	2020	2021	2022
<18 वर्ष	0.50	0.60	0.70	0.85	1.00
18-25 वर्ष	2.00	2.20	2.30	2.40	2.50
26-40 वर्ष	1.80	1.85	1.90	1.92	1.95
41-60 वर्ष	1.00	1.02	1.05	1.07	1.10
60+ वर्ष	0.20	0.22	0.23	0.24	0.25

इन आंकड़ों से स्पष्ट है कि युवा (18-25) और मध्यम आयु (26-40) के अपराधी संख्या में अपेक्षाकृत स्थिर वृद्धि है, जबकि नाबालिग (जन्मजात अपराधी) की संख्या तेजी से बढ़ी है और वृद्ध अपराधियों की संख्या न्यूनतम बनी हुई है।

अपराध 47त बढ़ चुके थे और पिछले दशक में यह वृद्धि करीब 60त हो गई है। वर्ष 2022 में देशभर में बच्चों के विरुद्ध दर्ज अपराध 1.62 लाख तक पहुँच गए, जो 2021 की तुलना में 8.7त अधिक है। इन आंकड़ों से पता चलता है कि कम उम्र के अपराधी बढ़ रहे हैं। सामाजिक-आर्थिक दबाव, बेरोज़गारी, परिवारिक अस्थिरता और डिजिटल प्रभाव को नाबालिग अपराधों में वृद्धि के संभावित कारणों में गिना जा रहा है।

युवा वर्ग अर्थात 18 से 30 वर्ष के अपराधियों की रिसर्च- एडवोकेट पंकज वाधवानी ने जानकारी देते हुए बताया कि युवा (18-30 वर्ष) यह आयु वर्ग अपराधियों में सर्वाधिक प्रतिनिधित्व रखता है। हालिया वर्ष 2022 में युवाओं द्वारा दर्ज अपराधों की संख्या में केवल मामूली गिरावट देखी गई है। तथापि, इस समूह में अपराध की दर अभी भी बहुत अधिक है। उदाहरण स्वरूप, महिला बलात्कार के मामलों में 18-30 आयु वर्ग की महिलाओं को निशाना बनाए जाने का अनुपात लगभग 66त है, जो संकेत देता है कि अपराधी सक्रिय रूप से इसी उम्र के समूह को टारगेट कर रहे हैं। रोजगार की कमी, शिक्षा में असंतोष और सामाजिक असमानताओं को युवा अपराध में योगदान देने वाले कारकों के रूप में देखा जाता है।

मध्यम आयु वर्ग अर्थात 26 से 40 वर्ष का डाटा क्या कहता है- लॉ प्रोफेसर एडवोकेट डॉ. पंकज वाधवानी ने अपनी कानूनी रिसर्च रिपोर्ट में कहा है कि मध्यम आयु वर्ग (26-40 वर्ष) - यह आयु समूह भी अपराध में उच्च हिस्सेदारी रखता है, विशेषकर संपत्ति अपराधों, आर्थिक अपराधों और हिंसक अपराधों में। उच्च जनसंख्या घनत्व और बढ़ते दबाव के बीच, इस उम्र वर्ग में आर्थिक अपराध (जैसे धोखाधड़ी) बढ़ सकते हैं।

वयस्क और वृद्धों में कम अपराध दर- की गई कानूनी रिसर्च में यह रुझान साहब ने आया है कि वयस्क (41-60 वर्ष) - इस आयु वर्ग में अपराधों की दर कम है। व्यक्तिगत जिम्मेदारियाँ बढ़ने के कारण अपराध में संलिप्तता कम हो जाती है। 41-60 वर्ष के लोगों द्वारा किए जाने वाले अपराध आम तौर पर वित्तीय या धोखाधड़ी संबंधी होते हैं। वैश्विक तथा भारतीय अध्ययनों से पता चलता है कि अपराध की दर आयु के साथ घटने लगती है। वरिष्ठ नागरिकों (60+ वर्ष) की सहभागिता और भी कम है।

केंद्र सरकार को सुझाव

एडवोकेट पंकज वाधवानी ने केंद्र सरकार को प्रेशियस सुझाव में कहा है कि युवा बेरोजगारी और शिक्षा- शिक्षा और रोजगार में असंतुलन युवाओं को अवैध मार्ग पर धकेल रहा है। अधूरी शिक्षा और काम की तलाश में फैली हताशा अपराध प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे रहीहै। टूटते परिवार और सामाजिक समर्थन की कमी युवा अपराध की एक बड़ी वजह है। अनुसूचित जाति/जनजाति की पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले युवाओं को संसाधनों की कमी के कारण अपराध की ओर प्रवृत्त हो तो आ है। इंटरनेट और सोशल मीडिया का बढ़ता उपयोग अपराध में नए रूप लेकर आया है (विशेषकर साइबर अपराध के रूप में)। युवा तकनीक का उपयोग अपराध के साधन और लक्ष्यों को विभिन्न तरीके से प्रभावित कर रहा है। बड़े शहरों में रहने वाले मध्यम वर्गीय वर्ग, वित्तीय दबाव, उधारी और मानसिक तनाव जैसे कारण भी अपराध को प्रेरित कर रहे हैं। साठ वर्ष से अधिक के वृद्धों के विरुद्ध धोखाधड़ी और ऑनलाइन स्कैम वृद्धावस्था में अकेलेपन और तकनीकी जागरूकता की कमी से और बढ़ गया है।

नशे से दूरी है जरूरी-निजी कंपनी में चला जागरूकता अभियान

पीथमपुर। सोमवार को थाना सेक्टर-1 क्षेत्र अंतर्गत एक निजी कंपनी में नशामुक्ति अभियान के तहत विशेष जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य औद्योगिक क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराना और उन्हें नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना रहा।

इस अवसर पर नगर पुलिस अधीक्षक पीथमपुर रवि सोनेर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ थाना प्रभारी सेक्टर-1, थाना स्टाफ और अन्य पुलिस अधिकारी भी मौजूद थे। कार्यक्रम में कंपनी के प्रशासनिक और मानव संसाधन विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारीगण और अन्य स्टाफ ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से नशा न करने की शपथ ली और नशामुक्त समाज के निर्माण में भागीदारी निभाने का संकल्प लिया। इस दौरान पुलिस विभाग द्वारा नशामुक्ति विषय पर जानकारी देने वाली बुकलेट्स और पेम्फलेट्स भी वितरित किए गए।

हरिहर की 3676 फीट ऊंची चोटी पर तिरंगा फहराकर लौटे पीथमपुर के युवा

पीथमपुर। नासिक की दुर्गम हरिहर चोटी पर 3676 फीट की ऊंचाई तक पहुंचकर पीथमपुर के युवा अभिषेक खंडेलवाल ने तिरंगा फहराया। कठिन रास्तों, तेज ढलानों और जोखिम भरे ट्रैक के बावजूद वे अपने भाई अंकुश खंडेलवाल के साथ सफलता पूर्वक चोटी तक पहुंचे। यह चोटी महाराष्ट्र की सबसे चुनौतीपूर्ण पर्वत चोटियों में से एक मानी जाती है।

अभिषेक ने बताया कि हरिहर किले की यह चढ़ाई सामान्य ट्रैकिंग से अलग है। यहां एक बिंदु पर 80 डिग्री के कोण की चढ़ाई करनी होती है, जिसमें छोटी-छोटी दरारों के सहारे चढ़ना पड़ता है। कई जगह तो सीढ़ियां तक कटी हुई हैं और पैर रखने की जगह मुश्किल से मिलती है। हवा की रफ्तार भी इस ऊंचाई पर असंतुलन पैदा कर देती है, लेकिन तिरंगा लेकर चोटी तक पहुंचने की प्रेरणा ने उन्हें कभी पीछे मुड़कर नहीं देखने दिया। उन्होंने कहा कि यह सिर्फ ट्रैकिंग नहीं, आत्मविश्वास, समर्पण और देश के प्रति सम्मान का प्रतीक था। जब वे चोटी पर पहुंचे तो सबसे पहले वहां मंदिर में दर्शन कर तिरंगा लहराया। आसमान में देश का झंडा फहराते देखना उनके लिए अविस्मरणीय क्षण था। अभिषेक के साथ उनके भाई अंकुश खंडेलवाल भी इस ट्रैक पर पूरी हिम्मत और जोश के साथ साथ रहे। दोनों भाइयों ने चोटी पर तिरंगा फहराकर अपने शहर पीथमपुर और प्रदेश को गौरवान्वित किया है। स्थानीय युवाओं के बीच इस साहसिक अभियान को लेकर उत्साह का माहौल है। लोगों का मानना है कि अभिषेक और अंकुश ने यह साबित किया है कि मजबूत संकल्प और देशभक्ति का जज्बा हो तो कोई भी चोटी फतेह की जा सकती है।

समिति में तुलसी जयन्ती पर अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

इंदौर। श्री मध्यभारत हिंदी साहित्य समिति में गुरुवार, 31 जुलाई, 2025 को तुलसी जयन्ती के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन है, जिसकी अध्यक्षता समिति के सभापति श्री सत्यनारायण 'सत्तन' करेंगे। कवि सम्मेलन में रतलाम के श्री धमचक मुल्थानी, देवास के श्री देवकृष्ण व्यास के अलावा इन्दौर से अर्चना अंजुम, रामचन्द्र अवस्थी, प्रदीप नवीन, सुरेखा भारती, वाणी जोशी आदि काव्यपाठ करेंगे। सूत्रधार कवि श्री गिरेन्द्रसिंह भदौरिया 'प्राण' है।

कार्टून कोना

मालवी जाजम में सावणी गीतों ने भिगोया, मासिक बैठक इस बार ऑनलाइन

इंदौर। सावन के महीने में जहां हर ओर हरियाली चादर ओढ़े प्रकृति इठला रही है, मोर पपीहा झूम झूम नाच रहे हैं, झरने झर झर मधुर राग सुना रहे हैं, मस्ती में झूमती उफनती नदियाँ अपना आपा खो रही हैं। ऐसे में मालवी जाजम में मालवी गीतों की प्रस्तुती ने सभी को सावन की झमाझम से भीगो दिया, सावन के रंग में रंग दिया। शुरुआत डॉ. शशि निगम ने सखियों संग सावन की मस्ती को रचना में पिरोया। उज्जैन से माया वदेका- ओजी आवियो सावण मईनो, म्हारा मनड़ा रा मोती बिखरिया जाय, पेरूँ हरियो लेरियो, रचऊँ दोई हाथ, आवेगा पीउजी घोड़ी चढ़ी परेदेसिया पधारिया । रेणु मेहता ने लोकगीत सुनाकर रंग जमाया- सावण की बरसे बदरिया, झूला झूले हो संवरिया, बादला से बरसे मोती, हाँ भीगे राधा गुजरिया। आशा मानधन्या-लीम की निंबोली पाकी, सावण मइनो आयो। मुकेश इंदौरी ने-सावण की या मिठी फुहार, लाई खुसियां की बहार । नलिन खोईवाल झरमर झरमर पाणी पड़े, हिवड़ा में हलचल घणी मचे। दिलीप सिंह राठौर- %यो सावण भी कई कमाल करे हे, कदी तो घणो तरसावे ने कदी घणो बरसे हे। ब्रजेन्द्र नागर ने व्यंग के बाण चलाये- सावण असो बरसयो के अंई वंई आणो जाणो मुसिकल हुईग्यो, कीचड़ से पालो पड़ीग्यो। सुनीता कुमावत ने जनमाष्टमी पर रचना सुनाई- बड़ो जतन से पालयो कोई काळो मत कीजो, कोई की मटकी फोड़ी हो तो म्हारे कीजो। हरमोहन नेमा-सावण के आवा दो, रिमझिम रिमझिम बरसात होणे दों, मोर पपिया के नाचणे दो। नंदकिशोर चौहान ने व्यंगात्मक रचना व दिलीप नीमा ने बारिश में संभलकर रहने की सीख देती रचना सुनाई आदि ने भी मालवी रचना पाठ किया।

चलते-चलते

चाय बिना चैन कहां, बारिश में पकौड़े कहां ?

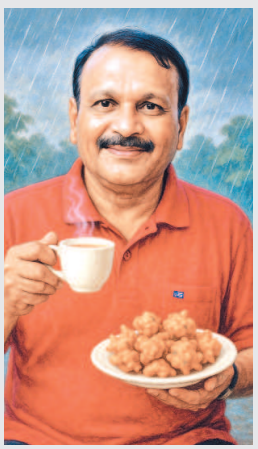

बारिश के पहले छींटे गिरे नहीं कि व्हाट्सएप पर पकोड़े की फोटो और बॉयलिंग चाय का स्लोमो वीडियो आ जाता है। मानो मेघराज को बुलावा न ग़पपति विसर्जन के ढोल से मिलता है, न यज्ञ से, सिर्फ़ दो कप कटिंग से मिलता है।

हम भारतीयों के लिए चाय क्या है, ये कोई हार्वर्ड की रिपोर्ट नहीं बता सकती। चाय हमारी भावनाओं का ब्लैक टी संस्करण है - कभी गर्म जोशी से भरी, कभी उबलते गुस्से वाली, कभी मीठी दोस्ती में डूबी हुई।

अब बारिश की बात करें तो बारिश का मक़सद ही हमारे समाज में दो चीजें है -

रोड पर गड्ढों का पुनर्जन्म, और

पकौड़ों की आत्मा का पुनरुत्थान।

एक सर्वे के अनुसार (जो मैंने अपने छत के कोने में बैठे छिपकली को देखकर किया), बारिश में जो पकौड़े नहीं खाता, उसका पेट तो ठीक रहता है, पर मन खाली-खाली सा लगता है।

चाय की टंकी और पकौड़े का पंप

हर मोहल्ले में एक अंकल होते हैं - जिन्हें बाकी महीनों में किसी ने नहीं देखा, पर बारिश की पहली बूँद के साथ वो बाल्टी लेकर छत पर जाते हैं, बारिश की पानी से बनी चाय के लिए। वो मानते हैं कि स्वर्ग में इसी पानी से देवताओं को दूध नहीं, अदरक वाली चाय पिलाई जाती है।

और पकौड़े? ओह भाई साहब! पकौड़े बनाने का वो दिन राष्ट्रीय त्यौहार से कम नहीं। बेसन की थैली को ऐसे पूजा जाता है जैसे ये नवरात्रि की पहली मिठ्ठी हो। आलू, प्याज़, हरी मिर्च - सब कटने के बाद परिवार में एक शांति छा जाती है, जो सिर्फ़ कड़क है और थोड़ा और सेंकना था के विवाद से टूटती है।

मानसून, मच्छर और मोहब्बत

बारिश के मौसम में जब दो प्रेमी मिलते हैं, तो उनके बीच प्यार की चिंगारी नहीं, अदरक की महक होती है। लड़का कहता है, चलो, एक गरम चाय हो जाए, और लड़की का जवाब होता है, पकोड़े होंगे तो चलूँगी। ये वही समय होता है जब कैफ़े कॉफ़ी डे वाले अपने रेट थोड़े और बढ़ा देते हैं और गली का टी-स्टॉल अपनी खटिया और दो कुर्सियाँ बाहर निकाल देता है।

गली में हर नुक्कड़ पर चाय की दुकान और उसके पीछे का देसी रेडियो बजता है - बरसात में तेरा नाम लिया... और सामने बैठे दो बुज़ुर्ग बहस कर रहे होते हैं कि सुभाष चंद्र बोस अगर जीवित होते तो पकौड़े पकका खाते।

न्यूज़ चैनल और बरसाती पकौड़े

अब न्यूज़ चैनलों की बात करें - वहाँ मॉनसून कवरेज कुछ यूँ होता है - कैमरा जूम इन करता है एक चाय की दुकान पर, बैकग्राउंड में एंकर चिल्लाता है, देखिए! कैसे जनता बारिश में खुद को गर्म रख रही है - पकोड़ों के ज़रिए!

और फिर कैमरा घूमता है - एक महिला बोलती है, हम तो हर साल पहला पकौड़ा भगवान को चढ़ाते हैं - और बाकी पति को। पति जी पीछे खड़े होते हैं - पकौड़ा खाते हुए, भावनाओं से लबालब।

पकौड़े की राजनीति

अब राजनीति में भी पकौड़े घुसे हुए हैं। एक नेता जी ने तो बेरोज़गारी पर बयान देते हुए कहा था - पकौड़े बेचना भी रोज़गार है। तब से देश के इंजीनियर और एमबीए वाले एक तरफ़ रिज़्यूमे भेजते हैं और दूसरी तरफ बेसन खरीदते हैं। बारिश के मौसम में बेरोज़गारी की दर थोड़ी गिर जाती है - क्योंकि पकौड़े बेचने वालों की सेल डबल हो जाती है और खाने वालों का वजन।

सास, बहू और चाय वाली साज़िश

सास चाय पीती है - बहू को चाय अच्छी नहीं बनानी आती। बहू जब सीख जाती है, तब सास कहती है, अरे तेरे हाथ की चाय तो सुसराल में ही अच्छी लगती थी... ये मौसम सिर्फ़ चाय का नहीं, तानों की चुस्की का भी होता है। और बहू - वो चाय बनाने के बहाने कॉल पर अपने मायके से पूछती है - अम्मा, पकौड़े में सोडा डालना है या नहीं?

निष्कर्ष- गरमा गरम

इस बारिश में यदि आपके घर में चाय नहीं बनी, पकौड़े नहीं तले गए, तो समझ लीजिए आपके टीवी का रिमोट अभी भी उसी इंसान के पास है जो व्रत वाला खाना हर शनिवार खाता है।

चाय और पकौड़ा सिर्फ़ खाद्य पदार्थ नहीं हैं, ये रिश्तों को जोड़ने वाला बेसन-बंधन हैं। ये वह स्वाद है जिसमें देश की आत्मा डूबी है - चाहे वो फ़िल्म का ब्रेक हो या पड़ोसन की खिड़की से आती खुशबू।

तो अगली बार जब बारिश हो और आपके घर से कोई बोले, बाहर कितनी अच्छी हवा चल रही है...

तो समझ जाइए - उसका असली मतलब है -

किचन में घुसो, पकौड़े तलो और चाय बनाओ!

– अजय कुमार बियानी
(इंदौरी व्यंग्यकार, पकौड़ा प्रेमी एवं अदरक चाय के प्रचारक)